**हकीकत फुरमानकी, कहूं सुनो सब मिल।**
**नूर अकल आगे ल्याएके, साफ करूं तुम दिल।। ११ ।।**

अब श्री प्राणनाथजी कह रहे हैं कि मैं जागृत बुद्धि (असराफील) को लेकर आया हूं और कुरान के सारे भेदों को खोलकर तुम्हारे दिल के संशय मिटाता हूं।

**अब सो आखिर आइया, उठ खड़े रहो मुस्लिम।**
**पाक करूं नूर अकलें, खबर देऊं खसम।। १२ ।।**

अब वही आखिरत का समय आ गया है। इसलिए, हे मुसलमानो! (मोमिनो-सुन्दरसाथजी) उठकर जागृत हो जाओ। नूर अकल (असराफील-जागृत बुद्धि) से तुम्हें निर्मल कर अपने धनी की पहचान कराता हूं।

**सबको प्यारी अपनी, जो है कुल की भाख।**
**अब कहूं भाखा मैं किनकी, यामें भाखा तो कई लाख।। १३ ।।**

सबको अपनी-अपनी पारिवारिक भाषा प्यारी है। संसार में तो लाखों भाषाएं हैं तो मैं किस बोली (भाषा) में वर्णन करूं?

**बोली जुदी सबन की, और सबका जुदा चलन।**
**सब उरझे नाम जुदे धर, पर मेरे तो केहेना सबन।। १४ ।।**

यहां तो सबकी बोली जुदा है और सबकी रस्मो रिवाज अलग हैं और सभी अलग-अलग नाम के पीछे लड़ रहे हैं, परन्तु मुझे तो सभी के लिए कहना है।

**बिना हिसाबें बोलियां, मिने सकल जहान।**
**सबको सुगम जानके, कहूंगी हिंदुस्तान।। १५ ।।**

इस संसार में तो बिना हिसाब बोलियां (भाषाएं) हैं, इसलिए सब के लिए सब से सरल जानकर मैं हिन्दुस्तानी भाषा में कहूंगी।

**बड़ी भाखा एही भली, सो सबमें जाहेर।**
**करने पाक सबन को, अंतर मांहें बाहेर।। १६ ।।**

यही भाषा सबसे अच्छी है जिसे सब समझते हैं, इसीलिए मैं इसी भाषा में कहूंगी, क्योंकि मुझे तो सभी के संशय मिटाकर निर्मल करना है।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। १६ ।।

## सनन्ध आरबीकी

**कलाम आरबी हक रसूल ना, फआल कसीदे कलम।**
बोली आरबी सच है रसूल मेरे की, करके साखियां कहत हों।
**लाकिन माय आरफो, मिन्हुम हिंद मुस्लिम।। १ ।।**
लेकिन नहीं समझेंगे, इनमें हिंद के मुस्लमान।।

स्वामीजी कहते हैं कि मेरे रसूल ने जो अरबी भाषा में वचन कहे, वह सत्य हैं। उनकी गवाहियां देकर मैं कहती हूं, पर हिन्दुस्तान के मुसलमान नहीं समझेंगे क्योंकि कुरान अरबी भाषा है।

Nijanand App

**इस्म्यो हिंद मुस्लिम, अना कलम सिदक।**
सुनो हिंद के मुस्लमानों, मैं कहुं सच।
**मा कलिम अना किजब, मा कुंम इन्द कलिमा हक।। २ ।।**
ना कहुंगी मैं झूठ जो, तुम पास कलमा सांच है।।

हे हिन्द के मुसलमानो! सुनो, मैं झूठ नहीं कहूंगी। सच कहूंगी कि तुम्हारे पास जो कलमा है वह सच है (अल्लाह की वाणी है)।

**अल्लजी मुस्लिम असलू, अना हवा मरा कुंम।**
जो कोई मुस्लिम असल हैं, मेरा प्यार बहुत तुम से।
**अना हाकी हकाईयां असलू, लिना इमाम इलंम।। ३ ।।**
मैं कहूं बातें असल की, साथ मेरे इमाम का ग्यान है।।

जो कोई सच्चे मुसलमान हैं, मेरा उनसे बहुत प्यार है। मेरे पास इमाम मेंहदी का इल्म है, जिससे मैं तुम्हें असल की बातें (अर्श अजीम की बातें) कहूंगी।

**लागिल हिंद मुस्लिम, अना कलिमों हिंद कलाम।**
खातर हिंद के मुसलमानों के, मैं कहुं हिंद की बोली।
**अना कुल्ल सवा सवा, अना हुरम इमाम।। ४ ।।**
मुझ को सब बराबर-बराबर है, मैं हुं औरत ईमाम मेंहदी की।।

मैं इमाम मेंहदी की बेगम हूं। हिन्द के मुसलमानों को मैं हिन्द की बोली में ही कहूंगी, क्योंकि मेरे लिए सब बराबर हैं।

**हिंद कलाम जिद हवा अना, लागिल हिंद मुस्लिम।**
हिंद की बोली ज्यादे प्यारी है, मुझे खातर हिंद के मुस्लमानों के।
**अल्लजी सिदक यकीन, हुब हक रसूल कदम।। ५ ।।**
जो कोई सच्चे यकीन वाले हैं, प्यार सांचा रसूल के कदमों पर।।

मुझे हिन्दुस्तान के मुसलमानों के लिए हिन्द की बोली ज्यादा प्यारी है, इसलिए जिनको सच्चा यकीन है और रसूल पर सच्चा प्यार और भरोसा है, वह मेरी बात सुनें।

**बेन कुरान मकतूब, अल्लजी रसूल कवल।**
दरम्यान कुरान के लिखा है, जो कि रसूल ने आगे ही से।
**जाया मेहेदी कलम, लिसान लुगाद बदल।। ६ ।।**
आए के मेंहदी कहेगा, जुबान बोल बदल कर।।

रसूल साहब ने पहले से ही कुरान में लिख दिया है कि इमाम मेंहदी जब आएंगे तो मेरी ही बातों को अलग भाषा में कहेंगे।

**वाहिद लिसान वाहिद लुगद, अल्लजी सेसमा उलगवर।**
एक जुबान एक बोल जो कुछ आसमान जमीन में है।

Nijanand App

**बेन हिम इमाम लुकनत, लिसान लुगाद ला कादर।।७।।**
दरम्यान इनों के इमाम मेंहदी तोतला, जुबान बोलने से ना समरथ।।

आसमान जमीन का जो ज्ञान है उसे स्पष्ट एक जबान में बोलेंगे, परन्तु इनके बीच में इमाम मेंहदी की जबान तोतली होगी, अर्थात् वह सरल भाषा बोलेंगे।

**कुल्ल आदम ओ कुल्ल गिरो, मा कुल सुर आ वाहिद।**
सारे आदमी और सब उम्मत जो कोई, है सब की राह एक है।
**लुगा तरीक मा मिसलह्, कमा फास काल महंमद।।८।।**
बोलना राह नहीं है उन जैसा, ऐसे जाहेर कह्या मुहम्मद साहेब ने।।

मुहम्मद साहब ने स्पष्ट कहा है कि सभी धर्मों के सभी आदमियों का रास्ता एक है, परन्तु उनका बोलना एक-सा नहीं है।

**अल्लजी मकतूब हाकिमा, बेन कुरान कलाम।**
जो कि लिख्या है ऐसा, दरम्यान कुरान के वचन।
**हाला अना कएफ कलमो, लुगाद बदल इमाम।।९।।**
अब मैं क्यों कर कहुं, एक बोल बिना इमाम मेंहदी।।

कुरान में जो लिखा है वह वचन सत (सत्य) है, जिसे इमाम मेंहदी (श्री प्राणनाथजी) ने स्वीकार किया है। मैं वही अब बोलूंगी।

**हरफ कमा मकतूब, अल्लजी हक रसूल।**
सब्द जैसा कोई लिख्या है, जो सांचे रसूल अल्लाह ने।
**व ला इतरो मिन्हुंम लुगा, फआल इमाम कुल्ल कबूल।।१०।।**
कदी न जाबे इनमें से एक बोल, किए इमाम ने सब कबूल।।

रसूल साहब ने जैसा कुरान में लिखा वह सब सच है, और उसे इमाम मेंहदी साहब श्री प्राणनाथ जी ने स्वीकार किया।

**अल्लजी इमाम अगबू, हुब हस्ना हिंद मकान।**
जो इमाम मेंहेदी ने पसंद किया, प्यारी है वही हिंद की ठौर।
**कुल्लू लाए जाया कलाम गैर, मिसल हिंद इलाने कफयान।।११।।**
कही न आवे बोली और मानिंद, हिंद के नहीं तो बस है।।

इमाम मेंहदी ने हिन्दुस्तान का ठिकाना (स्थान) पसन्द किया है। वह मुझे प्यारा है, इसलिए हिन्दुस्तान की हिन्दुस्तानी भाषा के अतिरिक्त और बोली बोलना मेरे वश की बात नहीं है।

**लागिल मुस्लिम कुरब ना, अना फाआली कुंम इसहल।**
खातर मुस्लिम कबीलें मेरे के, मैं कर देऊं तुम को सहल।
**अना कलिम कलाम कुंम, जालिक यकून कुम दीन सुगल।।१२।।**
मैं कहुं बोली तुम्हारी, ज्यों होवे तुम को दीन में सुख विलास।।

मेरे मुसलमानों के कबीलों के लिए इस भाषा को मैं सरल बना देती हूं, जिससे तुमको अपने दीन में (धर्म में) सुख मिले, मैं वही तुम्हारी बोली बोलूंगी।

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। २८ ।।

Nijanand App